Topic:→ Sunita Kumari
Subject:- Philosophy.
(2) Meaning of Nastika. (S.)
B.A Part-I (S)

Ans:→ भारतीय दर्शन में निष्काम कर्म के बारे में बतलाया गया है। अपनी भावना को हम किस प्रकार प्रकट स्वाभाविक व्यक्ति हैं से व्यक्त करते हैं। एवं अपना कुछ न कुछ का मानी ईश्वर को इस जगत में नहीं रहने के बारे में बतलाया गया है। नास्तिक दर्शन में अपनी समस्या पर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई है। इस विषय को लोग आस्तिक दर्शन में ईश्वर को मानते हैं। नास्तिक दर्शन में नहीं मानता है।

यही सब बात को ध्यान में रख कर हम अपने व्यवहार आचार विचार धर्म कर्म सब प्रकार की भेद भावना को अपने बुद्धि द्वारा व्यक्त करना

P.T.O.

अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। इसमें मनुष्य की अवधारणाएँ विचार विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था या निष्ठा आदि समाहित मानव मूल्य एक ऐसा अवधारणाओं विचार, विश्वास मनोवृति

आस्था या निष्ठा आदि समाहित होते हैं, मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अन्तः करण द्वारा नियंत्रित होते हैं, तो दूसरी ओर उसको संस्कृति एवं परम्परा द्वारा क्रमशः विस्तृत एवं परिपोषित होते हैं। 'बहुजनहित' इस जीवन मूल्यों की कसौटी मानी जाती है।

स्वच्छता, त्याग, प्रेम, सत्य, अहिंसा जैसे जीवन मूल्यों का उपयोग यदि मानव केवल जीवन यापन के लिए करता है, तो सद्गुण जीवन मूल्यों की कसौटी पर पूर्ण नहीं उतरते,

जीवन मूल्यों को स्थूल रूप से दो श्रेणियों में बाह्य यानी विभक्त किया गया है।

P.T.O.

'Value' (वैल्यू) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Valere' शब्द से मानी जाती है। जो किसी वस्तु की कीमत या उपयोगिता को व्यक्त करता है।

भारतीय धर्म ग्रन्थों में मूल्यों के लिए 'शील' शब्द अनेक स्थानों पर प्रयुक्त हुआ है। यह शब्द मूल्य का पर्याय नहीं वरन् 'सामीप्य' या 'सामीपी' शब्द है।

मूल्य एक प्रकार का मानक है। कहीं-कहीं 'शील' शब्द चरित्र के लिए भी प्रयुक्त हुआ है।

वस्तुतः "मूल्य एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया, विचार, व्यक्ति के मन निर्णयात्मक रूप से आता है।

तो मूल्य कहलाता है।"

'मूल्य' और आदर्श दोनों ही चरित्र निर्माण हैं। व्यक्तित्व विकास

P.T.O.

(Introduction in Indian Philosophy

भारतीय दर्शन में (Asmika) का महत्व विशेष रूप से दिखाया गया है ईश्वर ही सब कुछ है मनुष्य ईश्वर पर विश्वास करके कोई भी कार्य करते हैं

पर ईश्वर सब देखने वाला सबको कठिन परिस्थितियों में भी रक्षा करते हैं और जगत (world) पर ही आधारित है बिना ईश्वर एक पत्ता भी नहीं हिल पाता है

आस्तिक से अधिक महत्व आस्तिक दर्शन में देखने को मिलता है ईश्वर के बल पर मनुष्य लोगों के आने वाले कार्य करता है अतः ईश्वर ही सब जगत का

निर्माता है वही जन्म देता है उन्हीं की कृपा से संसार कि सुरक्षा यानी सुचारु रूप से चलता है आस्ति अधिक विश्वास प्रकट करना अपने आपमें सबल बनाकर रहना अत:

सि. ठ

आत्मिक शक्ति का उपयोग करना उज्ज्वल भविष्य की कामना करना बुरा से अच्छाई की ओर अग्रसर हो व्यक्ति का गुण है।

स्वभाव से व्यक्ति आगे बढ़ता है अब इस तरह का तर्क-वितर्क शब्दों द्वारा अनुमान लगाना ही नैतिक दायित्व बनता है।

(Indian Philosophy of Astika) यही सब भारतीय दर्शन में संक्षिप्त रूप से देखने को मिलता है।

इन शब्दों में हम यही जानते हैं। (Astika) ईश्वर पर आधारित है आस्था यानी विश्वास पर विशेष रूप से बल दिया जाता है e.t.c.

———— o ————